ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 405-407

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सांस्कृतिक चेतना

दर्शना कुमारी

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग– बी.डी.एम.म्यू. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 07.12.2019, Revised- 11.12.2019, Accepted - 14.12.2019 E-mail: -darshnakumari860@gmail.com

सारांश : ***संस्कृति से तात्पर्य है– सामाजिक मानस अथवा चेतना से है जिसकी इस प्रसंग में स्वयं प्रकाश विषय के अर्थ में ही नहीं किंतु विचारों प्रयोजनों और भावनाओं की समिति के अर्थ में ग्रहण किया जाना चाहिए पुरुष के लिए जो व्यक्तित्व है वही समाज के लिए संस्कृति दोनों का सार है आदर्शों और मूल्यों की भावना संस्ति व्यक्ति को ऐसा सामाजिक ऐतिहासिक संस्था प्रदान करती है जो अपने प्रभावों की दशमी उसे उसके व्यक्तित्व को अभी संस्कृत और विनीत करता है संस्कृति मूलभूत निष्ठा से प्रारूप भूख होती है और इसमें चरित्र अथवा व्यक्तित्व को एक विशिष्ट आदर्श लक्षित होता है वह समूचे जीवन का एक प्रायोजन निर्देश प्रस्तुत करती है जिसके प्रकाश में समस्त संस्थाएं व्यापारिक होती है और जो अंततोगत्वा सामाजिक जीवन को एकता और आकार प्रदान करती है इस प्रकार व संस्कृति जीवन की और विशिष्ट दृष्टिकोण है अनुभव के मूल्यांकन की और व्याख्या का एक विशिष्ट मूलभूत प्रकार है विचार भावना और आश्रम के विभिन्न प्रस्तावों में संस्कृति की सिद्धि होती है दूसरे शब्दों में हम संस्कृति को राष्ट्रीय समाज की आत्मा कह सकते हैं यह की स्थिति आत्मा के अस्तित्व में है और वही व्यक्ति के जीवन का सच्चा मूल्य है संस्कृति को भी हमें इसी परिधि में आना होगा वह एक ऐसी अभियान तरीकों और अध्यात्म निष्ठा के प्रतीक है जो दृष्टि गम में होने की अपेक्षा अनुभव गम्य में अधिक है व्यक्ति की वस्तु परिधि समाज की आत्माओं एवं परंपराओं में उसका संरक्षण रहता है।***

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक मानस, विचारों प्रयोजनों, भावनाओं, व्यक्तित्व, संस्कृति, आदर्शों और मूल्यों ।

संस्कृति समग्रता आध्यात्मिक जगत से संबंधित अर्थात दर्शन का सूक्ष्म तत्व है बल्कि उसका एक भौतिक पक्ष भी है जो औद्योगिक विकास वास्तुकला ललित कला तथा अन्य कृतियों एवं परंपरागत रीति नीति और आदि में व्यंजक दया प्रकट होता है ऐसा इसलिए क्योंकि इन सब की पृष्ठभूमि में एक मानव चेतना कार्य करती है संस्कृति का प्रत्यक्ष घटन संवेदी कला संस्कृति साहित्य कृषि शिल्प तथा राजनीति और विभिन्न संस्थाओं के धर्म का धार्मिक जीवन व्यापार में परिलक्षित होता है संस्ति समाज का क्षेत्र है जिसमें समाज स्वयं रूप से कर्म रथ को प्रगति पथ का आरोहण करता है समाज के विभिन्न कार्यों एवं स्वरूपों में संस्कृति प्रति छाया ढूंढती है संस्ति से ही उसमें एक विशिष्ट गरमा रहती है जो देश या समाज अपनी गरिमा को खो देता है वह सांस्कृतिक निधि से भी वंचित हो जाता है।

श्री मैथिलीशरण गुप्त वैष्णव भक्त कवि हैं उनके द्वारा भारतीय संस्कृति को स्वर मिलता है परंतु उनकी भारतीय संस्ति का अभिप्राय हिंदू संस्कृति है यह हिंदू संस्ति वेद पुराण रामायण महाभारत स्मृति शास्त्र आदि पर आधारित है गुप्त जी के राज्य काल में यह अपने पूर्ण विकास अवस्था को प्राप्त थी श्री रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में गुप्त काल चौथी सदी तक आते–आते हिंदुत्व का पूरा विकास हो गया और उसके सारे अंकुश तो हो गए जिन्हें हम आज देखते हैं हिंदुत्व के भी मुख्य अंग हैं उसकी जो भी प्रधान लक्षण और विशेषताएं हैं वह गुप्त काल तक बनकर तैयार हो गए इसके बाद हिंदुत्व के निर्माण में कोई नई ही लगी कहीं से भी उसने कोई बड़ा उपकरण नहीं लिया"।[1]

श्री मैथिलीशरण गुप्त के संस्कार परंपरानिष्ट हिंदू के संस्कार हैं। वे उस परिवार के सदस्य हैं जिसमें हिंदुत्व को समग्रता के साथ स्वीकार किया गया है। मनोविज्ञान के अनुसार शिशु पर माता–पिता की रुचि अरुचि तथा जाति और समाजगत चेतना व धार्मिक आचरण का सहज ही प्रभाव पड़ता है इसलिए मैथिलीशरण जी ने अपनी जाति और सामाजिक परंपराओं एवं धार्मिक आस्थाओं को सहजता में ही प्राप्त कर लिया है उनकी प्रारंभिक शिक्षा जिसका असाधारण महत्व सर्व स्वीकृत है सेठ राम चरण जी कवि के पिता द्वारा संग्रह धार्मिक विशेषता है रामचरित संबंधी पुस्तकों के स्वाध्याय के रूप में ही है इस प्रकार गुप्त जी ने आज तक और निष्ठा के घरेलू वातावरण में राम साहित्य का अध्ययन किया"""। कवि ने शैशव में देखा था। उनका विश्वास ही नहीं समान विश्वास था। जो बहु प्रचलित और सर्वमान्य था। इस सामान्य स्वीकृति अथवा व्यापक में उसकी प्राप्ति हुई श्रद्धा संभावित सौंदर्य भावना और नैतिक चेतना को बना दिया

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

परिणाम स्वरुप मैथिलीशरण जी का व्यक्तित्व राम मय बन गया तथा हिंदुत्व अपने समग्र रूप में उनके रग–रग में बस गया।

गुप्त जी का परिवार संयुक्त और पूर्णतया वर्णाश्रम धर्म का अनुयाई है। शासन व्यवस्था की .ष्टि से गुप्तजी राजतंत्र को अधिक श्रेष्ठ समझते हैं और अहिंसा के आदर्श को स्वीकार करते हुए भी अनिवार्य हिंसा की आवश्यकता पर बल देते हैं। उसका निषेध नहीं करते दंड के संबंध में उनका विचार है कि न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म हैं। युद्ध की आवश्यकता को भी बराबर अनुभव करते हैं और उसकी महत्वा इनकार नहीं कर पाते। उनके व्यक्तित्व पर विभिन्न प्रकार के प्रभाव पड़े हैं, जिसमें धारणा गत प्रभावों के लिए उसका अधीत साहित्य अधिक उत्तरदायी है। कालिदास और तुलसीदास जी के विषय विशेष प्रिय कवि रहे हैं, किंतु उनके साहित्य को ग्रहण करते समय भी उन्होंने निजत्व की स्वतंत्रता सदैव सुरक्षित रखी है। उसमें प्राचीनता और नवीनता का अद्‌भुत मेल है। अतीत गौरव के प्रति महा मोहासक्त हैं और आधुनिकता के मंगलकारी अंश से अप्रत्याशित ढंग से प्रभावित। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में भारतीय संस्.ति पृष्ठभूमि का कार्य करती है। वह उनके ह्रदय में पूर्णतया बस गई है और उनके प्रत्येक क्रियाकलाप में अ.श्य प्रेरक व्यक्ति शक्ति का कार्य करती है। भारतीय संस्.ति की लगभग सभी विशेषताओं को उनके काव्य में वाणी मिली है।

उनके काव्य में सांस्.तिक उपादान अभिव्यक्त हुए है–

1. जीवन सिद्धांत मैथिलीशरण गुप्त की जीवन में गहरी आस्था है। वह उसके प्रति अनुराग की भावना रखते हैं। उनका विश्वास है कि यह जीवन जीने के लिए मिला है, फिर क्यों ना विधिवत गौरव पूर्ण जीवन जिया जाए। इसके लिए कर्मशील व्यक्ति ही जी सकता है अकर्मण्य नहीं। अनवरत कर्मशील ताकि पक्षपाती हैं और उस कर्मशीलता में भी निष्कामता के प्रबल समर्थक निष्काम कर्म ही जीवन को ऊंचा उठाता हैं। व्यक्ति में नया आत्मविश्वास और उल्लास भरता है, परंतु निष्काम वही हो सकता है, जिसमें त्याग की भावना हो, त्याग में मुक्ति बसती है और मुक्ति, मुक्ति से श्रेष्ठ है।

होता जहां त्याग वहीं से मुक्ति
हैं मुक्ति के सम्मुख तुच्छ भुक्ति।[2]

पुस्वार्थ द्‌वारा व्यक्ति सभी सुखों को सहज ही प्राप्त कर सकता है उपलब्धि के लिए उससे श्रेष्ठ उपाय और कोई नहीं है–

सिद्‌ध एक पुस्वार्थ हमारी भुक्ति मुक्ति का मंत्र।[3]

जीवन में उत्थान पतन लगा हुआ है। उठने वाला गिरता है और गिरने वाला उठता है, इसलिए अनवरत कर्मशील रहना मनुष्य का ध्येय भी होना चाहिएं–

–फिर भी उठाऊंगा और बड़े के रहूंगा मैं
नर हूं पुरुष हूं मैं, चड़के रहूंगा मै [4]

गुप्त जी का कर्म संबंधी सिद्धांत हैं–

तन से सब लोग का भोग, मन से महा अलौकिक योग,
पहले संग्रह का सहयोग स्वयं त्याग कर फिर उद्‌योग। [5]

2. धार्मिक भावना भारत एक धर्म प्राण देश है भारत का प्रत्येक प्राणी जन्म से ही धार्मिक होता है। सभी निवासी धन प्राण होते है। श्री गुप्त जी जैसा धार्मिक एवं संस्कारों में पड़ा हुआ व्यक्ति भला धार्मिकता से ओतप्रोत कैसे ना होता। राम और .ष्ण भारतीय धर्म के पर्याय हैं इससे अधिक व्यापक और प्रभाव कोई दूसरा इष्ट देव भारत में मान्यता नहीं पा सका। गुप्त जी की भी भगवान राम में अखंड़ आस्था हैं। वे उन पर अनुरक्त है। उनके अतिरिक्त अन्य कोई देव उनका ह्रदय झं.त नहीं कर पाया–

निजी मर्यादा पुरुषोत्तम ही मानव का आदर्श
नहीं और कोई कर पाता मेरा ह्रदय स्पर्श [6]

गुप्तजी श्रीराम में मनुत्व का चरम विकास और दे वक्त की पूर्ण प्रतिष्ठा पाते हैं राम ईश्वर है या
मनुष्य। वह इससे कोई सरोकार नहीं मानते वह तो केवल उसका राम नाम जपते हैं

राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या
विश्व में रमे हुए सब कहीं नहीं हो क्या
तब मैं नीलेश्वर हूं ईश्वर क्षमा करें
तुम ना रहो तो मन तुम्हें रमा करें।

मैथिलीशरण गुप्त की भक्ति प्राचीन भारतीय स्वरूप को लेकर चलती है। श्री मैथिलीशरण गुप्त रामानंद द्वारा परिवर्तित श्री संप्रदाय के भक्त हैं।

विशिष्टाव्दैतवाद में शंकर के विपरीत ब्रह्म को उपाधि विशिष्ट माना जाता है। उनके अनुसार जगत के सभी प्राणी चिद्‌चित् विशिष्ट ब्रह्मा अंशअंशी है। गुप्त जी को तत्व जीव और ब्रह्म के अंशी शिव का यही भाव सिद्धांत मान्य है। नकुल को समझाते हुए युधिष्टर कहते हैं।

सुनो तात हम सभी एक हैं भवसागर के तीर
हो शरीर– यात्रा में आगे पीछे का व्यवधान,
परमात्मा के अनुरूप हैं आत्मा सभी समाज। [7]

3. राजनीतिक और सामाजिक आदर्श–गुप्तजी शासन संबंधी आदि के विषय में अपने अलग विचार रखते हैं। राजतंत्र में विश्वास करते है। राजतंत्र की एक व्यक्ति की अयोग्यता में प्रजातंत्र की अनेक व्यक्तियों की अयोग्यता को कभी अधिक घातक समझता है। कवि युग वाले युग के लिए कवि पथ प्रशस्त करता है।

गुप्त जी के मतानुसार सामाजिक बंधन व्यक्तित्व के विकास में बाधक नहीं अपितु साधक भी है। साकेत के आदर्श समाज में एक तनु के विभिन्न सुनो से खिले वर्जन रहते

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

परस्पर हैं मिले। [8]

4. आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि मैथिलीशरण गुप्त जीवन के पूर्णता के लिए भौतिक विकास परम आवश्यक मानते हैं यह लोक बनने में ही पारलौकिक सफलता संभव है। मैथिलीशरण गुप्त काव्यों की पृष्ठभूमि में जिस भौतिक जीवन का चित्रण हुआ है। वह काफी समृद्ध है और ऐश्वर्यापूर्ण है। वह कहते हैं–

"काम रूपी वारिदो के चित्र से इंद्र की अमरावती के मित्र से कर रहे नृप शोध गगन स्पर्श है शिल्प कौशल के परम आदर्श हैं कोर्ट कौशल के पर प्रणित विहंग है। [9]

गुप्त जी द्वारा वर्णित परिकल्पित राज्यसभा और नगरों के वर्णन इस बात के प्रतीक हैं कि वे उनके दृष्टिकोण से जीवन की सफलता के लिए भौतिक समृद्धि आवश्यक है। आध्यात्मिकता भारतीय संस्ति की मौलिक विशेषताएं हैं श्री मैथिलीशरण गुप्त जीवन की पूर्णता के लिए भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों को आवश्यक मानते हैं। भौतिक समृद्धि यदि उनके लिए शरीरवत् हैं तो आध्यात्मिक उन्नति प्राण बस उनकी दृष्टि में जीवन यापन के लिए दोनों तत्व शरीर और प्राण का अपना स्थान है एक के अभाव में दूसरा तत्व अपनी सत्ता को बनाए रखने में समर्थ नहीं हो सकता।

5. परंपराओं में आस्था मैथिलीशरण गुप्त एक परंपरा निष्ठा कवि हैं भारतीय संस्ति का यह आख्याता परंपराओं में अटूट विश्वास रखता है परंपराओं के महत्व का निरूपण करते हुए प्रोफेसर नगेंद्र लिखते हैं सामाजिक जीवन की प्रथाएं और संस्कार भी संस्ति के भव्य निर्देशन हैं उनमें संस्कृति का स्वरूप ना जाने कब से संरक्षित चला रहा है [10]

मैथिलीशरण के काव्य में सभी परंपरा में वर्णित हुए हैं भारतीय वैवाहिक विधि विवाह के समय ब्राह्मणों द्वारा वेद मंत्रों का उच्चारण यज्ञ प्रक्रिया वर और वधू का विधि की परिक्रमा करना वर द्वारा वधू का वेदी हाथ पकड़ना तथा सदा के लिए उसे अपना बना लेना दान और दहेज देना आदि कितने ही परंपरागत क्रियाओं का आख्यान श्री गुप्त ने अपने काव्य में किया है–

विप्र वर पढ़ने लगे तब वेद मंत्र विधान से"" दान और दहेज में संपत्ति समुचित दी गई। [11]

भारतीय जीवन धारा की यह अक्षर बने हैं उनकी लेखनी से कोई भी हिंदू संस्कार छूटने नहीं पाया है। भारत एक वीरों का देश रहा है यहां के वीर यदि एक और राज अभिषेक का स्वागत करते हैं तो दूसरी ओर वे मृत्यु के स्वागत से भी तनिक नहीं हिचकिचाते।

पुरातन से लेकर आज तक प्रचलित राम नाम सत्य है कि उच्चार का एक दृश्य बता रहे हैं–

कंठ कंठ का उठा शून्य शून्य जाग उठा। सत्य काम सत्य है, राम नाम सत्य है। [12]

अंत में कह सकते हैं मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्ति के महान पोशाक और व्याख्याता के रूप में काव्य में सदैव समाहित रहते हैं उनके द्वारा ग्रहण संस्कृति में भारतीय परंपराओं आस्था और धर्म एवं निष्ठा का जीवंत रूप है उनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण सब प्रकार से उदार और अपने देश के गौरव के अनुकूल हैं उनकी सांस्तिक विचारधारा में विश्व संस्ति के प्रभुत्व विद्यमान हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दिनकर– संस्कृति के चार अध्याय।
2. चंद्रहास– पृष्ठ– 128, मैथिलीशरण गुप्त।
3. पृथिवी पुत्र पृष्ठ– 21, मैथिलीशरण गुप्त।
4'. नहुष– पृष्ठ–39, मैथिलीशरण गुप्त।
5 स्वदेश संगीत पृष्ठ– 15, मैथिलीशरण गुप्त।
6. पृथ्वी पुत्र पृष्ठ– 21, मैथिलीशरण गुप्त।
7. जय भारत पृष्ठ– 48, मैथिलीशरण गुप्त।
8. कुणाल गीत पृष्ठ– 15, मैथिलीशरण गुप्त।
9. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त।
10. साकेत एक अध्ययन पृष्ठ– 114 15, मैथिलीशरण गुप्त।
11. रंग में भंग पृष्ठ– 10 11, मैथिलीशरण गुप्त।
12. साकेत पृष्ठ– 115, मैथिलीशरण गुप्त।

*****